मनसा सेवा - 92

अव्यक्त बापदादा :- (28/03/2002)

➳ _ ➳ वैसे बापदादा ने देखा है कि सेवा से लगन अच्छी है। सेवा के लिए एवररेडी है, चांस मिले तो प्यार से सेवा के लिए एवररेडी हैं। लेकिन **अभी सेवा में एडीशन करो - वाणी के साथ मनसा, अपनी आत्मा को विशेष कोई न कोई प्राप्ति के स्वरूप में स्थित कर वाणी से सेवा करो।** मानी भाषण कर रहे हो तो वाणी से तो भाषण अच्छा करते ही लेकिन उस समय अपने आत्मिक स्थिति में विशेष चाहे शक्ति की, चाहे शान्ति की, चाहे परमात्म प्यार की, कोई न कोई विशेष अनुभूति की स्थिति में स्थित कर मनसा द्वारा आत्मिक स्थिति का प्रभाव वायुमण्डल में फैलाओ और वाणी से साथ साथ सन्देश दो।

➳ _ ➳ **वाणी द्वारा संदेश दो, मनसा आत्मिक स्थिति द्वारा अनुभूतिकराओ। भाषण के समय आपके बोल आपके मस्तक से, नयनों से, सूरत से उस अनुभूति की सीरत दिखाई दे कि आज भाषण तो सुना लेकिन परमात्म प्यार की बहुत अच्छी अनुभूतिहो रही थी।** जैसे भाषण की रिजल्ट में कहते है। बहुत अच्छा बोला, बहुत अच्छा, बहुत अच्छी बातें सुनाई, ऐसे ही आपके आत्म स्वरूप की अनुभूति का भी वर्णन करें। मनुष्य आत्माओं को वायब्रेशन पहुँचे, वायुमण्डल बनें। ➳ _ ➳

➳ _ ➳ जब साइंस के साधन ठण्डा वातावरण कर सकते हैं, सबको महसूस होता है बहुत ठण्डाई अच्छी आ रही है। गर्म वायुमण्डल अनुभव करा सकते हैं। साइंस सर्दी में गर्मी का अनुभव करा सकती है, गर्मी में सर्दी का अनुभव करा सकती, तो **आपकी साइलेन्स क्या प्रेम स्वरूप, सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप वायुमण्डल अनुभव नहीं करा सकती। यह रीसर्च करो।**

➢➢ हम संसार के वक्ता नहीं है...

➳_ ➳ भाषण करके हम साक्षात्कार कराएं...

→ आत्माओं को हम दिखाई न दे...

उनको हमारी वाणी, हमारे वचन सुनाई न दे...

■ परमात्म वाणी की झलक दिखाई दे...

➢➢ हमारे भाषण का लक्ष्य

➳_ ➳ प्रभावित करना नहीं है...

➳_ ➳ स्तुति, प्रशंषा प्राप्त करना नहीं है...

➳_ ➳ कोई कहे हमारा चिनात्न, याददाश्त अच्छी थी, यह नहीं है...

➢➢ हमारे भाषण का लक्ष्य है...

➳_ ➳ साक्षात्कार कराना...

➳_ ➳ आत्माओं को अशरीरीपन का अनुभव कराना...

→ बाबा के महावाक्य हैं... वे संसार के लोग खेल कूद, मनोरंजन सब कुछ कर सकते हैं लेकिन अशरेरी नहीं बना सकते...

■ ये काम केवल तुम कर सकते हो...

▶ आत्माओं को उनके आत्मिक स्वरुप का अनुभव कराना...

➳_ ➳ आत्माओं को परमात्म प्रेम का अनुभव कराना...

→ आत्माएं परमातम याद में खो जाये...

■ वे प्रभु प्रेम में मगन हो जाएँ...

➳_ ➳ आत्माओं में वैराग उत्पन्न करना...

→ इस संसार के लिए उनके मन में वैराग जग जाए...

■ वैराग की अग्नि प्रज्वलित हो जाये...

■ जो इतना पकड़ रखा है संसार को, वे मोह के धागे छूट जाये...

➳_ ➳ आत्माओं में बल भर देना...

→ आध्यात्म के मार्ग पर चलने के लिए हिम्मत, साहस चाहिए...

■ उनमे शक्ति भर देना...

➳_ ➳ आत्माओं को अनुभूति कराना..

→ ऐसी अनुभूति जो पहले कभी नहीं हुई हो..

■ शक्ति की अनुभूति

■ शांति की अनुभूति

■ सुख की अनुभूति

■ परमात्म प्रेम की अनुभूति

➢➢ आत्मा में सब कुछ छिपा है...

➳_ ➳ पर सभी आत्मा केंद्र से दूर हैं...

→ सब देह की परिधि पर काम कर रहे हैं...

■ सारी समझ सेवा, राजनीति, धर्म पर है...

➢➢ दूध को वैसा ही रख दे तो

➳_ ➳ एक दिन में खराब हो जायेगा...

→ उसमे छाछ की बूँद डालो तो

→ एक दिन और चलने वाला दही बन जायेगा...

■ उस दही का मंथन करो तो

■ कुछ दिन चलने वाला मक्खन बन जायेगा...

▶ मक्खन को उबालो तो

▶ कभी न बिगड़ने वाला घी बन जाएगा...

➳_ ➳ एक दिन में खराब हो जाने वाला दूध कभी न बिगड़ने वाला घी बनने की क्षमता रखता है...

➢➢ जीवन में स्वमान के, श्रेष्ठ संकल्पों रुपी छाछ की बूँद उस दूध में डालते रहो...

➳_ ➳ दूध... दही... मक्खन... घी... हम कहाँ तक पहुंचे हैं..

→ क्या अभी दही हैं या घी बन चुके हैं...

■ अपनी चेकिंग करनी है...

▶ नये संकल्प डालने

▶ उनका मंथन करते रहना

▶ तपाना

▶ जिससे जीवन दही, मक्खन से कभी न बिगड़ने वाला घी बन जाये...

➢➢ मुरली से एक ही पॉइंट ले...

➳_ ➳ उसका विस्तार, मंथन करे...

→ फिर उसे तपाना

■ अर्थात उसको जीना...

■ उसका स्वरुप बनना...

▶ पुरानी आदतों को तोड़ने के लिए बहुत कुछ सहन करना होगा...

➢➢ अनुभूति कराने के लिए

➳_ ➳ हम स्वयम उसका स्वरुप बने...

→ तभी हम अनुभव करा सकते हैं...